लेकिन इस बार

स्वागत है स्मॉग
सरकारों को नोटिस भेजता
राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग
निर्माणों पर रोक थोपता
नेशनल ग्रीन ट्रायब्यूनल
आड-ईवन के पीछे भागता
अरविंद केजरीवाल और
मौलिक अधिकार जापता
दिल्ली का उच्च न्यायालय
सोचो ये सब भी कहाँ बोलते
और बोलते भी तो क्या बोलते
गर स्मॉग फ़ाइलों में सिमटता
निर्माण स्थलों में ही बिलखता
फुटपाथों पर ही अकड़ा मिलता
गंदी बस्तियों में जकड़ा मिलता
इसलिये तेरा स्वागत है स्मॉग
तेरा स्वागत है विप्लवी स्मॉग
अब ग़रीब की दीवाली भी तू
किसान की जली पराली भी तू
आकाश में छाया मदमस्त फाग
फ़िज़ाओं में हुंकारता हुआ राग
तेरा स्वागत है विप्लवी स्मॉग
स्वागत है स्मॉग!
स्वागत है !

- विकास नारायण राय

ऐसा भी क्या झूठा अहंकार जी!

मोदी जी! मोदी जी!
कैसी ये नोटबंदी जी!
बाहर लटका, भीतर खटका
उठा देश को पटका जी!
अडानी, अंबानी मौज मनाते
हम कतार में मर जाते जी
काले धन का तो हुआ न बाल भी बांका!
आंखे फ़ाड़े सफेद देख रहा
हक्का-बक्का जी!
वे तो हमेशा की तरह आज भी ख़ुशहाल,
और हमारा तो हो गया
और भी बंटाधार जी!
देशहित में आपका कैसा ये फ़रमान
देश के ही ख़िलाफ कर दिया
जंगे एलान जी!
चारों ओर मचा हैअजीब हाहाकार
पर नहीं सुनाई पड़ती आपको
कोई चीत्कार जी!
आप कहते पचास दिन करो इंतज़ार
पर मौत और भूख तो नहीं करते इंतज़ार जी!!
तीन दिन से भूख से बिलख रहे थे बच्चे!
बेबस मां थक गयी
लगा-लगा बैंक के धक्के जी!
नहीं दे पाई बच्चों को रोटी के टुकड़े
जितनी भी खुशी
आखिर कर ली दुखियारी रज़िया ने ख़ुदकुशी जी!
आपकी इस नोटबंदी ने तो हिला दी पूरी हस्ती
किनारे पर ही डूबा दी देश की कश्ती जी!
अब तो मान जाओ हुज़ूर!
ऐसा भी क्या झूठा अहंकार जी!
देशहित में आपका कैसा ये फ़रमान
देश के ही खिलाफ़ कर दिया जंगे एलान जी!
आपकी इस नोटबंदी ने हिला दी पूरी हस्ती
किनारे पर ही डूबा दी देश की कश्ती जी!

-सरला माहेश्वरी

रेरा के बावजूद लूट के और हथकंडे हैं बिल्डरों के पास

पेज एक का शेष

नाम दे दिया है। और क्लब की सदस्यता एवं इसके उपयोग के लिये अलग से फ़ीस वसूल रहा है। एक बार तो बिल्डर ने यहां दुकाने तक भी खुलवा दी थीं लेकिन शिकायतें होने पर सरकारी दबाव में बंद करनी पड़ीं।

फ्लैट बेचते वक्त जिस तरणताल (स्विमिंग पूल) का सपना दिखाया गया था, वह चालू नहीं हुआ, कभी हो भी नहीं सकता क्योंकि उसके निर्माण में लगी घटिया सामग्री की वजह से ज्यों ही उसमें पानी भरता है वह रिस-रिस कर बेसमेंट में भरने लगता है। इस लिये ताल को तुरंत खाली करना पड़ता है। बजाय इस समस्या को ठीक करने के बिल्डर ने ताल को खाली रखना बेहतर समझा है।

लाइसेंस के लिये एक जरूरी सर्त सोलर गीज़र लगाने के नाम पर उसने साढे सात करोड़ रुपये अलग से वसूले जबकि इसकी लागत फ्लैट मूल्यों में पहले से ही जुड़ी हुई थी। इसके बावजूद यह सिस्टम बिल्कुल नकारा है। इसे केवल अधिकारियों की आंखों में धूल झोंकने के लिये बना दिखाया गया है। सोसायटी में स्ट्रीट लाइटें लगी तो जरूर दिखती हैं, परन्तु भारी-भरकम मेंटेनेन्स वसूलने के बावजूद अधिकांश लाइटें जलती ही नहीं।

बिल्डर द्वारा किये जा रहे उक्त सभी कारनामें गैरकानूनी हैं जिसका संज्ञान लेकर प्रशासन को इसे तुरन्त गिरफ़्तार कर लेना चाहिये। कायदे से जब वह फ़्लैट बेच ही चुका है तो उसका वहां बने रहने का कोई कानूनी अधिकार नहीं है। सोसायटी को चलाना व मेंटेनेन्स का सारा काम स्वयं सोसायटी के चुने हुए नुमायदों को अपने हाथ में ले लेना चाहिये। लेकिन बिल्डरों एवं माफ़ियाओं के हाथों बिकी हुई सरकार एवं उसका प्रशासन कभी भी बिल्डरों के विरुद्ध संज्ञान नहीं लेगा। इसके लिये तो खुद तमाम सोसायटियों को संगठित होकर बिल्डरों के विरुद्ध बड़ा संघर्ष करके इन्हें भगाना होगा वरना सारी उम्र ऐसे ही लुटते पिटते रहना होगा।

यूं तो मोदी सरकार 'रेरा' कानून पास करने का ढोल पीटती नहीं थकती। लेकिन इसके अन्तर्गत राज्य की खट्टर सरकार ने जो नियम बनाये हैं, वे बिल्डरों के हितों को ध्यान में रखकर। यहां तक कि इन नियमों का गजट नोटिफ़िकेशन भी रोका हुआ है। यह सब तभी संभव है जब खट्टर के संघी आकाओं की भली प्रकार सेवा बिल्डरों ने कर रखी है। अगर कभी फ्लैट मालिक इन बिल्डरों को अपने तईं सबक सिखाने की चेष्टा करेंगे तो तुरंत उनके विरुद्ध फ़ौजदारी मुकदमे दर्ज हुए मिलेंगे।

सारन डिस्पेंसरी में गंदगी के ढेर से गुजरने को मजबूर मरीज

फ़रीदाबाद। (म.मो.) केंद्र की मोदी और राज्य की मनोहर लाल सरकार स्वच्छता अभियान के सफल होने के बड़े बड़े दावे कर लोगों को बरगलाने का प्रयास कर रही है। सारन गांव स्थित स्वास्थ्य विभाग की डिस्पेंसरी के ठीक सामने पड़े गंदगी के विशाल ढेर इनके दावों की पोल खोल रहे हैं।

नगर निगम के अधिकारियों ने डिस्पेंसरी के गेट के ठीक सामने गंदगी फेंकने का डंपिंग पोइंट बनाया हुआ है। ऐसे में इस डिस्पेंसरी में आने वाले मरीजों को गंदगी के ढेर से गुजर कर डिस्पेंसरी के अंदर जाना पड़ता है। यह गंदगी कई दिनों तक यहीं पर पड़ा सड़ता रहता है। ऐसी दुर्गंध भरी जगह से गुजर कर डिस्पेंसरी के अंदर जाना मरीज़ों के लिये कितना मुश्किल होता होगा, इसे आसानी से समझा जा सकता है। इसके अलावा इस डिस्पेंसरी में आने वाले मरीजों को इलाज के नाम पर सिर्फ खानापूर्ति ही मिलती है। मरीज की हालत गंभीर हो या न हो उसे इलाज के नाम पर बीके अस्पताल में जाने की सलाह यहां तुरंत मुफ्त में दे दी जाती है। जहां से सफदरजंग अस्पताल रेफर कर दिया जाता है।

लोगों को उनके घर के नजदीक स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध करवाने के उदेश्य से सरकार ने जगह जगह डिस्पेंसरियां खोली हुई हैं। ताकि आसपास रहने वाले मरीजों को उनके घर के नजदीक इलाज मिल सके और बीके अस्पताल में आने वाले मरीजों का बोझ भी कम किया जा सके। लेकिन स्वास्थ्य विभाग की लापरवाही के कारण ज्यादातर डिस्पेंसरियों में इलाज के नाम पर खानापूर्ति की जा रही है। इन्हीं में शामिल है सारन गांव की डिस्पेंसरी। इस डिस्पेंसरी में डाक्टर के अलावा नर्स, फार्मासिस्ट और अन्य कर्मचारी तैनात हैं। लेकिन यहां तैनात डाक्टर ज्यादातर समय डिस्पेंसरी में उपलब्ध नहीं होती है। पूछने पर कर्मचारियों द्वारा बता दिया जाता है कि वे बीके अस्पताल गई है।

यहां आने वाले मरीजों का कहना है कि डिस्पेंसरी में हमेशा दवाओं का अभाव रहता है। जांच के बाद उन्हें एक दो तरह की दवाइयां थमा दी जाती हैं। बाकी दवा उन्हें महंगे दामों में बाजार से खरीदनी पड़ती हैं। कहने को इस डिस्पेंसरी में प्रसूति करवाने की सुविधा भी उपलब्ध है। लेकिन यहां प्रसूति के लिए आने वाली गर्भवती महिलाओं को तुरंत बीके अस्पताल ले जाने की सलाह देकर भेज दिया जाता है।

यह हालत तो डिस्पेंसरी में दिन के समय होती है। यदि रात के समय किसी गर्भवती महिला को प्रसूति के लिए ले जाया जाए तो डिस्पेंसरी का गेट तक नहीं खोला जाता। डिस्पेंसरी की सुविधाओं की कमी के अलावा यहां अन्य कई समस्याओं से भी आने वाले मरीजों को सामना करना पड़ता है।

डिस्पेंसरी में गर्भवती महिलाएं अक्सर अपनी नियमित जांच के लिए आती हैं। ऐसे में उन्हें सबसे ज्यादा इंफेक्शन होने का खतरा बना रहता है। डिस्पेंसरी परिसर को पार्किंग के लिए भी इस्तेमाल किया जा रहा है। आसपास के लोग अपने वाहनों को रात के समय परिसर में खड़ा करते हैं। इसके अलावा दिन के समय डिस्पेंसरी की यह खाली जगह पशुओं को बांधने के काम आ रही है। ऐसा नहीं है कि स्वास्थ्य विभाग के आला अधिकारियों को डिस्पेंसरी की हालत के बारे में पता नहीं है। इस मामले में पहले भी उन्हें शिकायतें मिलती रही लेकिन सब कुछ जानते हुए भी वे अपनी आंखे मूंदे बैठे रहते हैं।

महानतम हिन्दू

अकबर एक मुसलमान
उससे क्या पहचान
नहीं हिन्द की शान।
राणा प्रताप हिन्दू
न कि आजाद सिन्धु
हिन्दू होने से महान।
समीकरण आगे बढ़ाये
आज के महान भी गिनायें
गोडसे महान-ठाकरे महान
सुब्रयमण्यम स्वामी नहीं कम।
भागवत महान-योगी महान
तोगड़िया ठहरे महानतम।

- विकास नारायण राय

घर बैठे प्राप्त करें मज़दूर मोर्चा

आज ही अपने हॉकर से कहें कोई दिक्कत हो तो शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर बात करें। बल्लभगढ के पाठक अरोडा न्यूज एजेंसी से 9811477204 पर बात करें:

अन्य बिक्री केन्द्र :

1. **आनंद मैगजीन सैंटर केसी रोड, एनएच-5,**
2. **प्रिंट फोर्ट, टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड,**
3. **रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन,**
4. **5 ई-18 नरेन्द्र बुक सेन्टर - 9810229192**
5. **एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे,**
6. **राम खिलावन बल्लबगढ़ बस अड्डा पुलिस चौकी के सामने,**
7. **हितेश ग्रोवर सैक्टर 29 पेट्रोल पम्प के पास ।**
8. **जितेन्द्र, बाटा सैंटर - 9971064207**
9. **सिंगला मेडिकल स्टोर, जवाहर कॉलोनी, डिस्पोजल चौक, फरीदाबाद।**
10. **आरसीएम स्टोर, बाबा बालकनाथ मंदिर वाली गली, जवाहर कालोनी, फरीदाबाद।**